राष्ट्रीय वेक्टर जनित रोग नियंत्रण कार्यक्रम

छत्तीसगढ़ राज्य मलेरिया के दृष्टि से अत्यंत संवेदनशील है। अतः विश्व बैंक की सहायता से वर्ष 1997 से आदिवासी प्राथमिक स्वा0 केन्द्रो में ई.एम.सी.पी. एवं शेष प्राथ0 स्वा0 केन्द्रों मे राष्ट्रीय मलेरिया रोधी कार्यक्रम के माध्यम से मलेरिया नियंत्रण किया जा रहा है। जिसका मूल उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्रो में बुखार से पीडित व्यक्तियों की शीघ्र रक्त पट्टी बनाकर उन्हे प्राथमिक उपचार उपलब्ध कराना एवं रक्त पट्टी का परीक्षण भी शीघ्र हो कर मलेरिया से पीडित व्यक्ति को मौलिक उपचार समयावधी में दिया जा सके जिससे की समुदाय में मलेरिया फैलने से रोका जा सकें। इस कार्यक्रम के अंतर्गत मलेरिया पर नियंत्रण के लिये प्रमुख रूप से अपनाई जाने वाली रणनीतियां इस प्रकार है :

1 त्वरित निदान एवं शीघ्र उपचार – इसके अंतर्गत बुखार से पीडित व्यक्तियों की रक्त पट्टी बनाकर उन्हे प्राथमिक उपचार उपलब्ध कराया जाता है। रक्त पट्टी का परीक्षण भी शीघ्र करके मलेरिया से पीडित व्यक्ति को मौलिक उपचार समयावधि में दिया जाता है। वर्ष 2004–05 में 3874911 रक्त पट्टियां एकत्रित की गई है जिसमें से 187950 मलेरिया प्रकरण पाये गये है तथा 140182 फैल्सरपेरम प्रकरण पाये गये है। वर्ष 2004–05 में तीन मौत मलेरिया से हुई है।

मलेरिया की दवा वितरण के लिये 3818 उप स्वास्थ्य केंद्रों, 20433 बुखार उपचार केंद्रों, 11685 दवा वितरण केंद्रों, 1928 मलेरिया लिंक वालेंटियर और 36000 मितानिनों के माध्यम से सभी मजरों टोलों में काम किया जा रहा है। इसके अतिरिक्त प्रदेश के समस्त डिपो होल्डर्स के पास पर्याप्त मात्रा में दवाईयां उपलब्ध है।

2 सिलेक्टिव वेक्टर कंट्रोल – इसके अंतर्गत 3 कार्य किये जाते हैं –

1. कीटनाशक दवा का छिड़काव – मलेरिया नियंत्रण रोकथाम के लिए राज्य के 13 जिलों में डी.डी.टी. एवं कांकेर, दंतेवाड़ा एवं जगदलपुर में सिंथेटिक पाइरेथ्राइड का छिडकाव किया जाता हैं। वर्ष 2005 के लिये 600 मी.टन डी.डी.टी.एवं 85 मी.टन. सिंथेटिक पायरेथ्राइड का छिड़काव किया गया।
2. जैविक नियंत्रण – इसके अंतर्गत लार्वाभक्षी गम्बूज़िया मछली का पालन एवं वितरण किया जाता है। इनके पालन के लिये 6327 हैचरी (वितरण केन्द्र) गांव – गांव में बनाई गयी हैं।
3. व्यक्तिगत सुरक्षा – इसके अंतर्गत वर्ष 2003 में 70 हजार, वर्ष 2004 में 2 लाख 30 हजार एवं वर्ष 2005–06 हेतु भारत सरकार द्वारा 4 लाख दस हजार मच्छरदानियों का आबंटन प्राप्त हुआ है तथा मच्छरदानियाँ जिलो को प्राप्त भी हो रही है। इसके अतिरिक्त नीम का तेल आदि साधनों का प्रयोग करके मच्छर भगाने की सलाह भी दी जाती है।

3. स्वास्थ्य शिक्षा – इसके अंतर्गत मच्छर से बचाव तथा मलेरिया के उपचार के संबंध में स्वास्थ्य शिक्षा की महत्वाकांक्षी योजना पूरे प्रदेश में चलाई जा रही है। इसमें सभी गांवो में लोक कलाओं के माध्यम से स्वास्थ्य शिक्षा का प्रचार प्रसार किया जा रहा है।

राज्य कार्यक्रम अधिकारी (मले.)
संचालनालय स्वास्थ्य सेवायें,
छत्तीसगढ़, रायपुर